

प्रगति, विकास और आशा

सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 8

www.csir.res.in

अगस्त 2025

सीएसआईआर जिज्ञासा ओडीएस सप्ताह कार्यक्रम के समारोह में केंद्रीय विज्ञान मंत्री का संबोधन



सीएसआईआर जिज्ञासा कार्यक्रम के “एक दिन एक वैज्ञानिक के रूप में” (ओडीएस) सप्ताह के समारोह में केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने युवाओं में बढ़ती आकांक्षाओं की सराहना करते हुए कहा है कि भारत के युवाओं की आकांक्षाओं के लिए तीन महत्वपूर्ण घटकों—जागरूकता, कौशल और अवसर को आवश्यक बताया। डॉ. सिंह ने स्कूली छात्रों के बीच वैज्ञानिक उत्साह को सतत विकास के अवसरों में परिवर्तित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारत के वैज्ञानिक भविष्य को स्वरूप देने

के लिए छात्रों, स्कूलों, अभिभावकों और उद्योग के साथ गहन जुड़ाव का आह्वान किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, वर्तमान जिज्ञासा पहल में कई सुधार सुझाए। सबसे पहले, उन्होंने ओडीएस अनुभव में अभिभावकों को सीधे सम्मिलित करने का प्रस्ताव रखा—सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से आग्रह किया कि वे प्रत्येक प्रतिभागी के लिए कम से कम एक अभिभावक को आमंत्रित करें ताकि परिवार वैज्ञानिक अन्वेषण के महत्व को बेहतर ढंग से समझ सकें। उन्होंने बल देकर कहा

कि इस तरह की भागीदारी से छात्रों को घर पर समझ की कमी के कारण हतोत्साहित होने से बचाया जा सकेगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने “एक दिन शिक्षक के रूप में” नामक एक पारस्परिक मॉडल की अनुशंसा की, जिसमें सीएसआईआर के वैज्ञानिक भाग लेने वाले छात्रों, खासकर छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों के छात्रों के स्कूलों का दौरा करेंगे। उन्होंने कहा कि इससे न केवल छात्रों की उपलब्धियों को मान्यता मिलेगी, बल्कि पूरे स्कूल समुदाय को भी प्रेरणा मिलेगी।

डॉ. सिंह ने उद्योग भागीदारों—जैसे कि एपिक हैकार्थॉन का सहयोग करने वालों—को होनहार छात्रों या परियोजनाओं को अपनाने, मार्गदर्शन और संभवतः वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करके निजी क्षेत्र की भागीदारी को सशक्त करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इससे स्कूल-स्तरीय नवाचार और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग के बीच के अंतर को समाप्त करने में सहायता मिलेगी।

अंत में, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कार्यक्रम समन्वयकों को छात्रों के परिणामों पर निरंतर नज़र रखने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वे उभरती रुचियों को बेहतर ढंग से समझ सकें और भविष्य की पहलों को उभरती आकांक्षाओं के साथ जोड़ सकें। उन्होंने कहा कि ये उपाय ओडीएएस और संबंधित कार्यक्रमों के माध्यम से उत्पन्न वैज्ञानिक गति को बनाए रखने में सहायता करेंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा छात्रों से वैज्ञानिक जीवन का अनुभव प्राप्त करने के आह्वान से प्रेरित ओडीएएस पहल में सीएसआईआर की 37 प्रयोगशालाओं के 14 हजार से ज़्यादा छात्रों ने भाग लिया। छात्रों ने शोधकर्ताओं के साथ कार्य किया, निर्देशित प्रयोग किए और वास्तविक प्रयोगशाला वातावरण में विशेषज्ञों के साथ बातचीत की।

इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने युवा प्रतिभागियों के साथ कई मार्मिक बातचीत का उल्लेख किया, जिनमें धौलपुर की आठवीं कक्षा की एक लड़की भी शामिल थी, जिसने अपनी छोटी बहन के कार्यक्रम से बाहर होने पर चिंता व्यक्त की थी – डॉ. सिंह ने कहा कि यह भारत के युवाओं में व्याप्त आकांक्षाओं का उदाहरण है।

इस कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित एक नवाचार प्रतियोगिता, एपिक हैकार्थॉन 2024 के विजेताओं का सम्मान था। शीर्ष चार



परियोजनाओं में रचनात्मकता, व्यावहारिकता और वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि का विविध मिश्रण परिलक्षित हुआ:

- पंजाब के पठानकोट के एक छात्र, जपतेग बामराह ने सोलरमेक नामक स्टर्लिंग इंजन-आधारित उपकरण विकसित करने के लिए सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है, जो संयुक्त ऊष्मा और शक्ति उत्पन्न करने के लिए संकेंद्रित सौर ऊर्जा और ऊष्मागतिकी सिद्धांतों का उपयोग करता है। शीतलक की आवश्यकता के बिना अधिकतम दक्षता के लिए डिज़ाइन किया गया उनका प्रोटोटाइप, ऊर्जा की कमी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में संभावित अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त है।
- गाज़ियाबाद के उद्धव गुप्ता और उद्धव बंधनी ने अपनी परियोजना “दृश्यमित्रम” के लिए दूसरा स्थान प्राप्त किया - यह दृष्टिबाधित लोगों के लिए एक आईडूइनो-संचालित, स्मार्ट वॉकवे सिस्टम है। यह सेंसर-आधारित पैदल यात्री पहचान, आरएफआईडी नेविगेशन सहायता और एक मोबाइल ऐप को एकीकृत करता है, जो दर्शाता है कि समावेशी डिज़ाइन और

स्मार्ट सिटी तकनीक का मेल कैसे हो सकता है।

- रुड़की की छात्रा श्रेया विनोद ने सीबेक प्रभाव पर आधारित थर्मोइलेक्ट्रिक सामग्रियों का उपयोग करके एयर कंडीशनर की अपशिष्ट ऊष्मा से बिजली उत्पन्न करने वाला उपकरण बनाकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। उनकी यह प्रणाली छह थर्मोइलेक्ट्रिक जनरेटर्स को जोड़कर तापीय अंतरों को उपयोगी विद्युत शक्ति में परिवर्तित करती है। एक ऐसा विचार है जिसमें ऊर्जा-कुशल इमारतों के लिए क्षमता है।
- भुवनेश्वर की सोयल परीजा ने भी आई-स्टेथो के लिए तीसरा स्थान प्राप्त किया। यह एक वायरलेस डिजिटल स्टेथोस्कोप है जो डॉक्टर और मरीज़ के बीच शारीरिक संपर्क को कम करता है। यह उपकरण ध्वनि को ग्रहण करता है, उसे प्रवर्धित करता है, डेटा में परिवर्तित करता है और उसे संगत उपकरणों तक पहुँचाता है—यह स्वास्थ्य सेवा और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) तकनीक के सम्मिलन को दर्शाता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, “ये छात्र सिर्फ प्रयोग नहीं कर रहे हैं - वे आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ नवाचार कर रहे हैं।” उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ऐसी परियोजनाएं स्थायी उद्यमिता की दिशा में अहम कदम साबित हो सकती हैं, बशर्ते उन्हें समय पर सहयोग और मार्गदर्शन मिले।

वर्ष 2017 में शुरू हुआ सीएसआईआर जिज्ञासा कार्यक्रम भारत के सबसे व्यापक वैज्ञानिक पहुंच प्रयासों में से एक बन गया है। 3,500 से अधिक गतिविधियों के माध्यम से 13.5 लाख से अधिक छात्रों और 80,000 शिक्षकों तक पहुंच के साथ, इसमें प्रयोगशाला भ्रमण, आभासी प्रयोगशाला, आईएसएल-

सक्षम सामग्री और नवाचार प्रतियोगिताएँ शामिल हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे नई शिक्षा नीति 2020 विषयों में लचीलापन लाकर और जिज्ञासा-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन देकर जिज्ञासा जैसे कार्यक्रमों का समर्थन करती है। उन्होंने कहा, “पहले, विकल्प थोपे जाते थे। अब छात्र अपनी रुचियों के अनुसार विकसित हो सकते हैं—और जिज्ञासा उन्हें ऐसा करने का मंच प्रदान करती है।”

वर्ष 2047 में भारत के अपनी शताब्दी की ओर अग्रसर होने पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने दोहराया कि देश की सबसे बड़ी शक्ति उसके युवा हैं।

उन्होंने आग्रह किया, “जिज्ञासा बने रहें, साहसी बने रहें और प्रश्न पूछना कभी बंद न करें, क्योंकि हर प्रश्न में खोज का मूल छिपा होता है।”

डॉ. जितेंद्र सिंह के साथ सीएसआईआर के महानिदेशक एवं डीएसआईआर के सचिव डॉ. एन. कलैसेल्वी, सीएसआईआर-एचआरडीजी की प्रमुख डॉ. गीता वाणी रायसम, सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक प्रो. वेणु गोपाल आचन्टा और सीएसआईआर में व्यापार विकास दल की वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. डी. शैलजा डोनमपुडी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी और विभिन्न कॉलेजों के छात्र भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सीएसआईआर-सीरी और बीकेबीआईईटी, पिलानी के बीच समझौता ज्ञापन

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी और बीके बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (बीकेबीआईईटी), पिलानी के बीच अकादमिक और अनुसंधान सहयोग को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस एमओयू के अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त रूप से वैज्ञानिकों एवं छात्रों का आदान-प्रदान करेंगे, एम.टेक., एम.एस. एवं पीएच.डी. छात्रों के अनुसंधान कार्य का संयुक्त पर्यवेक्षण करेंगे, तथा शैक्षणिक सामग्री एवं अनुसंधान प्रकाशनों का साझा उपयोग करेंगे। साथ ही, दोनों संस्थान संयुक्त रूप से अनुसंधान परियोजनाओं, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा समाजोपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन भी करेंगे। इसके अतिरिक्त, प्रयोगशालाओं का सहमति के आधार पर साझा उपयोग, वर्चुअल इनक्यूबेशन प्लेटफॉर्म का निर्माण और



नवाचार आधारित उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के प्रयास भी इस समझौते के महत्वपूर्ण आयाम हैं। एमओयू पर सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ. पी.सी. पंचारिया तथा बीकेबीआईईटी के निदेशक प्रो. विजय कुमार राउत ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर सीरी के पीएमई प्रमुख श्री प्रमोद तंवर एवं टीबीडी प्रमुख डॉ. नीरज कुमार; बीकेबीआईईटी से डॉ. निशांत कुमार एवं डॉ. स्मिता पारीक

सहित दोनों संस्थाओं के अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर दोनों संस्थानों के प्रमुखों ने भावी रणनीतियों एवं परस्पर सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की। यह सहयोग न केवल क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा प्रदान करेगा, बल्कि नवाचार, कौशल विकास और उद्यमिता के क्षेत्र में भी युवाओं को सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

सीएसआईआर-सीएसआईओ और एसपीयू के बीच समझौता ज्ञापन

सीएसआईआर-केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सीएसआईआर-सीएसआईओ) चंडीगढ़ और सरदार पटेल विश्वविद्यालय (एसपीयू) मंडी और ने सहयोगात्मक अनुसंधान, नवाचार और शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौता ज्ञापन पर एसपीयू, मंडी के कुलपति प्रो. ललित कुमार अवस्थी और सीएसआईआर-सीएसआईओ चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. शांतनु भट्टाचार्य ने हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. ललित अवस्थी ने बताया कि सीएसआईआर-सीएसआईओ स्वास्थ्य सेवा, कृषि और पर्यावरण निगरानी सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध है। यह सहयोग एसपीयू के छात्रों को अत्याधुनिक शोध परियोजनाओं में व्यावहारिक



अनुभव के अद्वितीय अवसर प्रदान करेगा। समझौता ज्ञापन का मुख्य उद्देश्य रणनीतिक और उभरते क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान

परियोजनाओं को सुगम बनाना, शैक्षणिक और शोध क्षमताओं को बढ़ाने के लिए संकाय और छात्र विनिमय कार्यक्रमों को बढ़ावा देना है।

सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में विशेष साप्ताहिक कार्यक्रम 'एक दिन वैज्ञानिक के रूप में' का आयोजन

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 119वें एपिसोड के दौरान बच्चों को विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाने के लिए 'एक दिन वैज्ञानिक के रूप में' कार्यक्रम का सुझाव दिया। इसी भावना से, सीएसआईआर की सभी 37 प्रयोगशालाओं ने 21 से 25 जुलाई 2025 तक इस कार्यक्रम को आयोजित करने की योजना बनाई। सप्ताह भर चलने वाले इस कार्यक्रम ने स्कूली छात्रों को वास्तविक वैज्ञानिकों की भूमिका निभाने, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का पता लगाने और व्यावहारिक अनुसंधान अनुभव प्राप्त करने के लिए एक समृद्ध मंच प्रदान किया। सीएसआईआर की

विभिन्न प्रयोगशालों द्वारा आयोजित किए गए इस कार्यक्रम की झलकियाँ प्रस्तुत है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू में 'एक दिन वैज्ञानिक के रूप में' पहल में युवा छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल किया गया। इस कार्यक्रम में "जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के विभिन्न स्कूलों के 500 से अधिक छात्रों ने इस कार्यक्रम के लिए पंजीकरण कराया था, जो उन्हें सीएसआईआर-आईआईआईएम की अनुसंधान सुविधाओं का पता लगाने और इंटरैक्टिव प्रशिक्षण मॉड्यूल

में भाग लेने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया।

सीएसआईआर-सीएलआरआई

सीएसआईआर-केंद्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएलआरआई), अड्यार, चेन्नई ने पूरे सप्ताह के लिए ओडीएस कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रत्येक दिन कम से कम 75 छात्रों ने भाग लिया, कुल मिलाकर लगभग 380 छात्र कार्यक्रम में शामिल हुए। प्रतिभागियों में न केवल चेन्नई के छात्र शामिल थे, बल्कि तेलंगाना, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश जैसे अन्य राज्यों के साथ-साथ तमिलनाडु के ग्रामीण

सीएसआईआर-आईआईआईएम



सीएसआईआर-सीएलआरआई



सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई



जिलों जैसे तेनकासी, थूथुकुडी, कुड्डालोर, वेल्लोर, पेरम्बलुर और कोयंबटूर के छात्र भी शामिल थे। प्रत्येक दिन विभिन्न शोध संस्थानों और स्टार्टअप्स के प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा एक लोकप्रिय व्याख्यान दिया गया। छात्रों ने विभिन्न प्रयोगशालाओं का दौरा किया, प्रयोग किए और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई

सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-

सीएसएमसीआरआई), भावनगर ने राष्ट्रव्यापी सीएसआईआर-जिज्ञासा पहल के अंतर्गत 21 से 25 जुलाई, 2025 तक आयोजित “एक दिन वैज्ञानिक के रूप में” कार्यक्रम के सफल समापन का जश्न मनाया। इस कार्यक्रम में राज्य भर के विभिन्न स्कूलों (भावनगर, ओखा, वापी, भुज, राजकोट, सिलवासा, अहमदाबाद, गांधीनगर, अमरेली, सूरत, वलसाड और डूंगरपुर (राजस्थान)) के 450 से अधिक छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा क्यूरेटेड सत्रों, इंटरैक्टिव प्रदर्शनों और मार्गदर्शन के माध्यम से, छात्रों को समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, नमक रसायन विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

सीएसआईआर-एसईआरसी

सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केन्द्र (एसईआरसी) में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिदिन औसतन विभिन्न

सीएसआईआर-एसईआरसी



सीएसआईआर-नीरी



स्कूलों के लगभग 80 छात्रों ने भाग लिया। उन्होंने सीएसआईआर-एसईआरसी और सीएसआईआर मद्रास परिसर की विभिन्न प्रयोगशालाओं का दौरा किया, वैज्ञानिकों से बातचीत की और वैज्ञानिक प्रदर्शनों में भाग लिया। इस पहल का उद्देश्य विज्ञान से वास्तविक दुनिया का परिचय प्रदान करके और अनुसंधान एवं नवाचार में करियर को बढ़ावा देकर अगली पीढ़ी को प्रेरित करना है।

सीएसआईआर-नीरी

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी

अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी), नागपूर में आयोजित 'एक दिन वैज्ञानिक के रूप में' कार्यक्रम में महाराष्ट्र, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 590 छात्रों को एक दिन के लिए वैज्ञानिक की भूमिका निभाने का अनूठा अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम में प्रयोगशाला भ्रमण, वैज्ञानिकों के साथ संवाद सत्र और जल एवं मृदा विश्लेषण, रसायन विज्ञान और भौतिकी में व्यावहारिक प्रयोग शामिल थे। छात्रों ने व्यावहारिक प्रदर्शनों और आकर्षक गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरणीय

चुनौतियों और स्थायी समाधानों की खोज की। इस कार्यक्रम में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के छात्रों, जिनमें जिला परिषद स्कूल, जवाहर नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, सरकारी और निजी स्कूल शामिल थे, ने सक्रिय भागीदारी की, जिससे समावेशी भागीदारी सुनिश्चित हुई। सीएसआईआर-नीरी के वैज्ञानिकों और सलाहकारों ने लाइव प्रदर्शनों के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन किया, जिससे पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में उनकी समझ और गहरी हुई।

सीएसआईआर-एनजीआरआई ने उत्तरकाशी के धराली गाँव में जीपीआर प्रणाली के द्वारा मलबे में दबे लोगों के लिए तलाशी अभियान शुरू किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई) के विशेषज्ञों ने मंगलवार 12 अगस्त, 2025 को ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार तकनीक का उपयोग कर 24 नेपाली मजदूरों सहित 66 लोगों का पता लगाने के लिए एक तलाशी अभियान शुरू किया, जो एक हफ्ते पहले उत्तरकाशी के धराली गांव के लगभग आधे हिस्से में पानी और भूस्खलन के बाद से लापता बताए गए हैं। जीपीआर एक ज्योग्राफिकल मेथड है, जो सतह के नीचे की ऑब्जेक्ट्स और स्ट्रक्चर का पता लगाने के लिए रेडियो वेव्स का उपयोग करता है। एनजीआरआई के अधिकारियों ने बताया कि एनजीआरआई का ये रडार कीचड़ और पानी की मौजूदगी में भी मानव जीवन का पता लगा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि हम जीपीआर सर्वेक्षण मलबे में विसंगतियों का भी पता लगाएंगे। बाढ़ प्रभावित स्थल पर पहुंची



विशेषज्ञों की टीम ने उन जगहों की पहचान की और उन स्थलों पर ध्यान केंद्रित किया जहां मलबे के नीचे किसी के मिलने की संभावना हो सकती है। एनजीआरआई ने इस साल फरवरी में तेलंगाना में एसएलबीसी सुरंग के ढहने में

फंसे लोगों का पता लगाने के लिए अपने जीपीआर का इस्तेमाल किया था। एनजीआरआई के ये रडार कीचड़ और पानी की मौजूदगी में भी मानव जीवन का पता लगा सकते हैं।

सीएसआईआर-एसईआरसी द्वारा आईएसी इलेक्ट्रिकल्स के साथ प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग समझौता

सीएसआईआर - संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र (सीएसआईआर-एसईआरसी), चेन्नई ने कोलकाता स्थित आईएसी इलेक्ट्रिकल्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ आपातकालीन पुनर्प्राप्ति प्रणाली (ईआरएस) के लिए एक प्रौद्योगिकी लाइसेंसिंग समझौते पर

हस्ताक्षर किए हैं। इस प्रणाली को ट्रांसमिशन लाइन में खराबी आने पर तुरंत बिजली आपूर्ति बहाल करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। यह समझौता सीएसआईआर-एसईआरसी की निदेशक डॉ. (श्रीमती) एन. आनंदवल्ली और आईएसी इलेक्ट्रिकल्स प्राइवेट लिमिटेड

के प्रबंध निदेशक श्री आदर्श गरोडिया के बीच हुआ।

इस कार्यक्रम में आईएसी इलेक्ट्रिकल्स के सहायक उपाध्यक्ष श्री केम्पाराजू के साथ-साथ सीएसआईआर-एसईआरसी के कई वरिष्ठ वैज्ञानिक भी उपस्थित थे, जिनमें डॉ. के. सतीश

कुमार, डॉ. एस. परिवल्लल, डॉ. एम.बी. अनूप, डॉ. पी. हरिकृष्णा और इस तकनीक के आविष्कारक डॉ. राजेंद्र पीतांबर रोकड़े शामिल थे। ईआरएस एक हल्का, मॉड्यूलर सिस्टम है जो चक्रवात या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं या अन्य व्यवधानों के कारण ट्रांसमिशन टावरों के ढहने के बाद 2-3 दिनों के भीतर बिजली बहाल करने के लिए एक अस्थायी सहायक संरचना के रूप में कार्य करता है। इसके विपरीत, स्थायी बहाली में सप्ताह का समय लग सकता है।

इस स्वदेशी तकनीक से महंगे आयात पर निर्भरता में उल्लेखनीय कमी आने की उम्मीद है, जो स्थानीय स्तर पर विकसित ईआरएस की तुलना में लगभग 60% अधिक होने का अनुमान है। सीमित वैश्विक निर्माताओं और उच्च लागत के साथ, घरेलू स्तर पर विकसित ईआरएस आउटेज से संबंधित नुकसान को कम



करने के लिए एक लागत प्रभावी और त्वरित प्रतिक्रिया समाधान प्रदान करता है। यह पहल मेक इन इंडिया विजन के अनुरूप है और इससे

बिजली बुनियादी ढांचे की बहाली में स्थानीय विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

सीएसआईआर-एनआईआईएसटी में अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों में करियर के अवसरों और कौशल विकास पर स्वर्ण जयंती सम्मेलन का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनआईआईएसटी) ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के एक भाग के रूप में हाल ही में “अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों में करियर के अवसर और कौशल विकास” विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं और छात्रों ने प्रतिभाओं को पोषित करने और युवा शोधकर्ताओं को सशक्त बनाने की रणनीतियों पर चर्चा की ताकि भारत के अनुसंधान और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत किया जा सके।



उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-एनआईआईएसटी के निदेशक डॉ. सी. आनंदरामकृष्णन ने की, जिन्होंने संस्थान की पाँच दशकों की वैज्ञानिक उत्कृष्टता और राष्ट्रीय विकास के लिए कुशल मानव पूंजी के निर्माण के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर प्रो. मनोज कुमार धर, वैज्ञानिक एवं नवप्रवर्तन अनुसंधान अकादमी (एसीएसआईआर) के निदेशक, ने मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य भाषण दिया और अंतःविषय कौशल, उद्योग-अकादमिक साझेदारी और नवाचार-संचालित करियर पथों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कौशल विकास और रोजगारपरकता के बीच एक अंतर है और हमें उस मांग को पूरा करने की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथियों के, रूप में श्री के. जयकुमार आईएएस, पूर्व मुख्य सचिव, केरल सरकार और निदेशक, सरकारी प्रबंधन

संस्थान; डॉ. शर्मिला मैरी जोसेफ आईएएस, प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, केरल सरकार और प्रो. कुरुविल्ला जोसेफ, प्रो-वाइस चांसलर, भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईएसटी), तिरुवनंतपुरम शामिल थे। इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में अनुसंधान सहयोग, शैक्षणिक आदान-प्रदान और छात्र इंटरनशिप को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर-एनआईआईएसटी और कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, तिरुवनंतपुरम के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इस सम्मेलन में उद्योग और अनुसंधान के दिग्गजों के साथ पैनल चर्चा हुई, जिनमें श्री एस. षण्मुगम, ग्लोबल लीडर, मैटीरियल्स टेक्नोलॉजी, जेडएफ सीवीसीएस, चेन्नई; डॉ. ए. के. असरफ, पूर्व एसोसिएट निदेशक (आर एंड डी), वीएसएससी तिरुवनंतपुरम; डॉ. प्रबोध हल्दे, प्रमुख, वैश्विक नियामक,

सार्वजनिक नीति एवं सिफारिश, मैरिको लिमिटेड; और डॉ. यू.एस. हरीश, मुख्य वैज्ञानिक और प्रमुख, रासायनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रभाग, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी उपस्थित हुए।

तकनीकी सत्रों का नेतृत्व श्री के. जयकुमार आईएएस; डॉ. श्रीजीत शंकर, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी; प्रो. महेश हरिहरन, उप निदेशक, आईआईएसआईआर तिरुवनंतपुरम; और डॉ. वैशाकन थम्पी, सहायक प्रोफेसर, एम.जी. कॉलेज, तिरुवनंतपुरम ने किया। इन सत्रों ने प्रतिभागियों के साथ आकर्षक और महत्वपूर्ण बातचीत को सुगम बनाया। मानव संसाधन और शैक्षणिक प्रभाग (एचआरएडी) द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों, शैक्षणिक संस्थानों के संकाय, उद्योग के प्रतिनिधियों और राज्य भर के छात्रों ने भाग लिया।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई द्वारा टेक कनेक्ट 2025 का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएफटीआरआई) ने ब्रिजिंग इनोवेशन एंड एंटरप्राइज, राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी) के साथ साझेदारी में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई परिसर में टेक कनेक्ट 2025 का आयोजन किया जिसमें 150 से अधिक हितधारकों ने हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अत्याधुनिक खाद्य एवं संबद्ध प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), उद्यमियों और उद्योग जगत के दिग्गजों से जोड़ना था। इस अवसर पर एनएसआईसी (दक्षिण क्षेत्र), बेंगलुरु के क्षेत्रीय महाप्रबंधक आर. सरवणकुमार मुख्य अतिथि थे।



सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की निदेशक डॉ. श्रीदेवी अन्नपूर्णा सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और व्यवसाय विकास के प्रमुख डॉ. आशीष

अशोक इनामदार ने इस पहल का श्रेय सीएसआईआर मुख्यालय में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और व्यवसाय विकास समूह की प्रमुख डॉ. शैलजा डोनमपुडी को दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि टेक कनेक्ट 2025 को

शोधकर्ताओं और एमएसएमई उद्यमियों के बीच की खाई को पाटने, वास्तविक समय प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करने और उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने

के लिए अभिकल्पित किया गया है। इस कार्यक्रम में कर्नाटक और तमिलनाडु के 95 एमएसएमई, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), लघु उद्योग भारती (एलयूबी),

सीएफटीआरआई के इनक्यूबेटी, वैज्ञानिक कर्मचारी और छात्र शामिल हुए। मैसूर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष केबी लिंगाराजू भी उपस्थित थे।

सीएसआईआर-एनईआईएसटी के वैज्ञानिकों ने प्रिमरोज़ की एक दुर्लभ प्रजाति की खोज की

सीएसआईआर-उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनईआईएसटी), जोरहाट ने अरुणाचल प्रदेश की दिबांग घाटी की धुंध भरी ऊँचाइयों में प्रिमरोज़ की एक दुर्लभ और आकर्षक नई प्रजाति की खोज की गई है, जो पूर्वी हिमालय की समृद्ध वनस्पति संपदा के बारे में नई जानकारी प्रदान करती है। *प्रिमुला इंडिका* नामक इस प्रजाति का औपचारिक वर्णन 2024 में व्यापक क्षेत्र-कार्य के बाद फाइटोटैक्सा पत्रिका में किया गया है। यह खोज मायोदिया दर्रे के पास की गई, जो 2,550 मीटर की ऊँचाई पर एक मनोरम किन्तु दुर्गम स्थान है। शोध दल का नेतृत्व भोलानाथ कॉलेज, धुबरी के बिपांकर हाजोंग और सीएसआईआर-पूर्वोत्तर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनईआईएसटी), जोरहाट के पंकज भराली ने किया। इस प्रजाति का नाम भारत के नाम पर रखा गया है।

इस प्रजाति में छोटे डंठल, कम लेकिन बड़े फूल, और एक कोरोला होता है जो सुनहरे-पीले रंग की आँख वाली चौड़ी, अंडाकार बैंगनी पंखुड़ियों से पहचाना जाता है। लगभग 1.2 सेमी व्यास वाले ये फूल अप्रैल और जुलाई के बीच खिलते हैं, जो मायोदिया की चट्टानी ढलानों पर हल्के बैंगनी रंग की छटा बिखेरते हैं। प्रमुख शोधकर्ता बिपांकर हाजोंग ने कहा कि इस तरह की खोजें दिबांग घाटी की भारत के सबसे जैव विविधता वाले क्षेत्रों में से एक होने की स्थिति की पुष्टि करती हैं। “घाटी का ऊबड़-खाबड़ इलाका और अपेक्षाकृत कम मानवीय हस्तक्षेप इसे अनदेखे वनस्पतियों के लिए एक आश्रय स्थल बनाते हैं। इसकी सीमित ज्ञात सीमा के कारण अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण



संघ (आईयूसीएन) के दिशानिर्देशों के तहत डेटा डेफिसिएंट (डीडी) के रूप में प्रारंभिक संरक्षण मूल्यांकन किया गया है। सह-लेखक पंकज भराली ने बताया कि हालाँकि हमने इस स्थल पर एक स्वस्थ आबादी दर्ज की है, लेकिन मायोदिया से आगे इस प्रजाति का वितरण अभी भी अज्ञात है और अधिक क्षेत्र-कार्य ज़रूरी है।

सीएसआईआर-नीस्ट ने जैव-विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय अंतर्विषयी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनईआईएसटी), तिरुवनंतपुरम ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह के एक भाग के रूप में जैव-निर्माण और स्वास्थ्य सेवा में उभरते रुझान 2025 विषय

पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, उद्योग विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और छात्रों ने जैव-निर्माण, संधारणीय स्वास्थ्य सेवा और जैव-अर्थव्यवस्था में प्रगति का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान किया।

सम्मेलन का उद्घाटन सीएसआईआर-कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र (सीएसआईआर-सीसीएमबी), हैदराबाद के निदेशक डॉ. विनय के. नंदीकूरी ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में शहरी और ग्रामीण भारत दोनों में स्वास्थ्य सेवा चुनौतियों के

समाधान के लिए विज्ञान-आधारित समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया और व्यक्तिगत उपचारों को सक्षम बनाने के लिए भारतीय जनसंख्या के अनुरूप आनुवंशिक स्वास्थ्य मानकों को परिभाषित करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सीएसआईआर-एनआईआईएसटी के निदेशक डॉ. सी. आनंदधर्मकृष्णन ने जैव-आधारित नवाचारों को प्रयोगशाला से उद्योग तक विस्तारित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय बायोई3 नीति के अंतर्गत जैव-विनिर्माण केंद्रों की भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि यह अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार पर केंद्रित है और प्रभावशाली, आवश्यकता-आधारित अनुसंधान के माध्यम से विकसित भारत के विज्ञान में योगदान देने के लिए सीएसआईआर-एनआईआईएसटी की प्रतिबद्धता दोहराई।

डॉ. यूजीन राज अरुलमुथु, रिलायंस लाइफ साइंसेज, मुंबई में जीन थेरेपी निर्माण के उपाध्यक्ष ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण दिया और जीन थेरेपी को सुलभ और किफायती



बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने व्यापक सामाजिक लाभ के लिए नवाचारों को आगे बढ़ाने की भारतीय जैव प्रौद्योगिकी उद्योगों की क्षमता पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण क्षण सीएसआईआर-एनआईआईएसटी और अमला इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, त्रिशूर के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर था। इस सहयोग का उद्देश्य कैंसर निदान और बायोमार्कर विकास में अनुसंधान

को आगे बढ़ाना और प्रयोगशाला निष्कर्षों को नैदानिक अनुप्रयोगों से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा देना है।

इस एक दिवसीय कार्यक्रम में छात्रों और युवा शोधकर्ताओं द्वारा मुख्य व्याख्यान, तकनीकी सत्र, पोस्टर प्रस्तुतियाँ और मौखिक सत्र आयोजित किए गए, जिससे अंतःविषय संवाद को बढ़ावा मिला और जैव प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सेवा में उभरती प्रतिभाओं को प्रदर्शित किया गया।

सीएसआईआर-एनएमएल में बीटीटीडी-2025 का समापन समारोह सम्पन्न

सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (एनएमएल), टाटा स्टील लिमिटेड और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जमशेदपुर के सहयोग से संयुक्त रूप से भारतीय धातु संस्थान (आईआईएम) जमशेदपुर चैप्टर द्वारा धातुकर्म अभियांत्रिकी (मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग) पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर के छात्रों के लिए संगोष्ठी “बिहाइंड द टीचर्स डेस्क (बीटीटीडी-2025)” के 14वें संस्करण का समापन समारोह हाल ही में एनआईटी जमशेदपुर में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन ने देश भर के युवा धातुकर्मविदों के लिए एक प्रमुख मंच प्रदान



किया है। इस वर्ष इस संगोष्ठी में देश भर के विभिन्न अभियांत्रिकी संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले 150 से अधिक छात्रों और वक्ताओं

ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कुल मिलाकर, बारह समानांतर सत्रों में 78 तकनीकी शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए, जिसमें धातु विज्ञान और पदार्थ विज्ञान

के विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी। कार्यक्रम के दूसरे दिन की शुरुआत टाटा स्टील की एचआरबीपी कॉर्पोरेट फंक्शंस की प्रमुख

सुश्री दीबा अहमद के परस्पर संवादात्मक मुख्य व्याख्यान से हुई, जिसमें एचआर कार्यों, छात्र की तैयारी, उत्सुकता प्रबंधन और आत्म-विकास के

महत्व पर पूरे विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया। सत्र की अध्यक्षता टाटा स्टील के पूर्व मुख्य शोधकर्ता डॉ. ए.एन. भगत ने की।

सीएसआईआर-एनपीएल द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन मापिकी-2025 का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) नई दिल्ली द्वारा 11 और 12 अगस्त 2025 को दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन मापिकी 2025 का आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय था- 'सभी समय के लिए माप, सभी लोगों के लिए मापन'। इस आयोजन का उद्देश्य सभी हितधारकों को एक मंच पर लाना और देश में मेट्रोलॉजिकल ट्रेसेबिलिटी श्रृंखला को मजबूत करने और देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान करने के लिए मेट्रोलॉजी के क्षेत्र में विकास, नवाचारों और चुनौतियों के बारे में चर्चा करना था। सीएसआईआर-एनपीएल के भौतिक-यांत्रिक मेट्रोलॉजी प्रभाग के अंशांकन और परीक्षण गतिविधियों का एक फ़्लायर जारी किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय विनिर्माण प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएमटीआई), बेंगलुरु के निदेशक डॉ. नागहनुमैया और विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के सदस्य (तकनीकी) डॉ. एसडी अत्री उपस्थिति थे।



इस सम्मेलन में एक पोस्टर सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें शोधार्थियों, शोध सहयोगियों, वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और पीएचडी छात्रों ने भाग लिया। सम्मेलन में प्रतिभागी शोधकर्ताओं द्वारा 44 पोस्टर प्रदर्शित किए गए और सर्वश्रेष्ठ पोस्टरों को पुरस्कृत भी किया गया। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-एनपीएल ने उद्योग जगत को तकनीकी अनुप्रयोग के लिए सामग्रियों की पुनर्प्राप्ति हेतु धातु/पॉलिमर लैमिनेट-आधारित

एमएलपी पुनर्चक्रण नामक तकनीक भी हस्तांतरित की गई।

समापन समारोह में सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक प्रोफेसर वेणुगोपाल अचंता ने देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में माप-पद्धति की आवश्यकता और योगदान तथा राष्ट्रीय मापन मानकों के विकास का मार्ग प्रशस्त करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला और सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों को स्वदेशी मापन मानकों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ने अपना 43वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने 2 जुलाई 2025 को बड़े उत्साह और उल्लास के साथ अपना 43वां स्थापना दिवस मनाया। समारोह के मुख्य

अतिथि डॉ. वीपी पॉल, माननीय सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-आईएचबीटी के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संस्थान की उपलब्धियों

की सराहना की। अपने सम्बोधन में डॉ. पॉल कहा कि विकसित भारत 2047 का सपना विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने महिला स्वास्थ्य व कुपोषण के मुद्दों

पर भी चर्चा की और कहा कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए सभी को एक साथ चलना होगा।

तत्पश्चात डॉ. टी.आर. शर्मा, प्रोफेसर एवं पूर्व उप-महानिदेशक, भाकृअनुप, ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने चावल की “ब्लास्ट” रोग प्रतिरोधक किस्मों के प्रजनन की सामाजिक, खाद्य सुरक्षा, पारिस्थितिकी और आर्थिक दृष्टि से महत्ता को रेखांकित किया। डॉ. महेश कुमार दधीच, सी.ई.ओ, एन.एम.पी.बी ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए हिमालय में औषधीय पादपों की विविधता, हर्बल क्षेत्र की भूमिका तथा दुर्लभ व संकटग्रस्त पादपों के संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता पर बल दिया। आईआईएसआईआर मोहाली के निदेशक डॉ. ए.के. त्रिपाठी, जो कि कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे, ने कहा कि विज्ञान ने सामाजिक विकास में विशेष भूमिका निभाई है। उन्होंने सीएसआईआर अरोमा मिशन के द्वारा सामाजिक सशक्तिकरण का उदाहरण दिया।

इससे पहले सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डा. सुदेश कुमार यादव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने फ्लोरीकल्चर, अरोमा और



मिलेट मिशन जैसी पहलों और उनके सामाजिक अनुकूल प्रभावों की जानकारी दी। उन्होंने जैवआर्थिकी को बढ़ावा देने में संस्थान का सामर्थ्य तथा नए अवसरों के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर संस्थान ने त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा और भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी फार्माकोपिया आयोग, गाज़ियाबाद के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। इसके अतिरिक्त सूरज श्री केमिकल्स लिमिटेड, नई दिल्ली; हिमालय एपियरीज, ऊना; एच.पी. फाइटोपल्स, पालमपुर; एवं प्लांट हब बायोटेक प्रा. लि., सोलन (हि.प्र.) के साथ तकनीकी हस्तांतरण समझौतों पर भी हस्ताक्षर हुए। साथ ही संस्थान

द्वारा आयोजित दो दिवसीय “हर्बल स्टेकहोल्डर मीट” का उद्घाटन हुआ, जिसमें तीन सत्र और विशेषज्ञों के व्याख्यान शामिल हैं। हर्बल स्टेकहोल्डर मीट की स्मारिका का भी इस अवसर पर विमोचन हुआ।

समारोह में सीएसआईआर-आईएचबीटी “वार्षिक रिपोर्ट-2024-25”; “इकोनॉमिक इम्पैक्ट ऑफ सीएसआईआर-आईएचबीटी टेक्नोलॉजीज”; “पोटेंशियल क्रॉप फॉर हर्बल सेक्टर”; एवं लो चिलिंग एपल वैराइटीज” पर पुस्तक व ब्रॉशर का विमोचन किया गया। सीएसआईआर मिशन “जैव सम्पदा, संरक्षण और संभावनाएं” पर एक वीडियो और ब्रॉशर भी विमोचित किए गए।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने मनाई कर्नल सर आर. एन. चोपड़ा की 143वीं जयंती

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू ने एक महत्वपूर्ण परंपरा को जीवित रखते हुए आईआईआईएम के संस्थापक निदेशक कर्नल सर आर. एन. चोपड़ा की 143वीं जयंती मनाई। सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद ने वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मचारियों, शोधार्थियों और अन्य कर्मचारियों के साथ कर्नल

सर आर. एन. चोपड़ा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। सीएसआईआर-आईआईआईएम समुदाय इस प्रतिष्ठित धरती पुत्र की दूरदर्शिता और समर्पण को याद करने और उनका सम्मान करने के लिए एक साथ आया।

इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए, डॉ. ज़बीर अहमद ने फार्माकोलॉजी और भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के विकास में

कर्नल चोपड़ा के अपार योगदान को याद किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे भारतीय फार्माकोलॉजी के जनक माने जाने वाले कर्नल सर आर. एन. चोपड़ा ने आयुर्वेदिक और यूनानी फार्माकोपिया के निर्माण की नींव रखी, पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक अध्ययन के दायरे में लाया और सदियों पुराने भारतीय पारंपरिक ज्ञान की वैश्विक प्रासंगिकता के लिए एक रास्ता



विकसित किया। चोपड़ा ने 1968 में सबसे पहले पुदीने की व्यावसायिक खेती शुरू की थी, और इस प्रकार, पुदीने के एक मात्र आयातक से, भारत वर्तमान में पुदीने के तेल और संबंधित उत्पादों का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक, निर्यातक और उपभोक्ता है। विश्वव्यापी उत्पादन में पुदीने के तेल की हिस्सेदारी वर्तमान में 80 से 85% के बीच है।

डॉ. अहमद ने कहा कि कर्नल चोपड़ा ने ऐसे समय में अपने काम को आगे बढ़ाया जब अनुसंधान सुविधाएँ बहुत सीमित थीं, फिर भी वे

भाग और अन्य औषधीय पौधों पर उल्लेखनीय प्रगति करने में सक्षम रहे। विज्ञान के प्रति उनका जुनून और मानवता की सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता हम सभी को प्रेरित करती रहती है। उन्होंने सीएसआईआर-आईआईआईएम समुदाय को याद दिलाया कि कर्नल चोपड़ा को सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यही होगी कि भारत की स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को वैश्विक मंच पर ले जाने के उनके दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए ईमानदारी और समर्पण के साथ काम किया जाए। डॉ. अहमद ने यह भी कहा कि औषधीय

भाग अनुसंधान में सीएसआईआर-आईआईआईएम की हालिया प्रगति, लैवेंडर-आधारित उत्पादों में नवाचार और राष्ट्रीय संस्थानों और उद्योगों के साथ साझेदारी, कर्नल चोपड़ा के मूल्यों के अनुरूप हैं। उपस्थित लोगों में विभिन्न शोध प्रभागों के प्रमुख और अन्य वरिष्ठ संकाय और कर्मचारी शामिल थे, जिनमें इंजी. अब्दुल रहीम, डॉ. आशा चौबे, डॉ. राजकिशोर राय, डॉ. सुफला गुप्ता, डॉ. पीपी सिंह, डॉ. अजय कुमार, राजेश कुमार गुप्ता और अन्य शामिल थे।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने गगनयात्रियों के लिए तैयार की विशेष भोजन सामग्री

गगनयान मिशन के प्रक्षेपण में एक वर्ष से अधिक समय शेष रहने के साथ, चयनित गगनयात्रियों का प्रशिक्षण शुरू हो गया है और अंतरिक्ष यान की तैयारी में तेजी आ गई है। गगनयात्री अपने साथ क्या भोजन ले जाएँगे, इसकी भी योजना बनाई जा रही है। सीएसआईआर-केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई) के वैज्ञानिक वर्ष 2027 में प्रक्षेपण के लिए निर्धारित इस मिशन के लिए चुने गए चार अंतरिक्ष यात्रियों के लिए विशेष मेनू पर काम कर रहे हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के साथ कम जगह में पौष्टिक और पौष्टिक भोजन तैयार करने के लिए चर्चा चल



रही है। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के अनुसार, “हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती वैसी ही है जैसी हर भारतीय को झेलनी पड़ती है, चाहे वह कितना भी प्रशिक्षित क्यों न हो। भोजन

न केवल पौष्टिक होना चाहिए, बल्कि लज़ीज़ और स्वास्थ्यवर्धक भी होना चाहिए। भारतीय स्वाद को लेकर विशेष रूप से सजग होते हैं, इसलिए भोजन अच्छा और आवश्यक कैलोरी

वाला होना चाहिए। डेयरी और फ़ोजन उत्पाद आदर्श हैं, लेकिन इनके आकार (आकार और स्वाद) पर काम चल रहा है।” संस्थान ने हाल ही में बाजरे की गोलियाँ विकसित की हैं, जिनमें चार गोलियाँ भोजन के रूप में ली जा सकती हैं

और संपूर्ण आहार सुनिश्चित करती हैं। बारह गोलियाँ (चार गोलियाँ, दिन में तीन बार) दिन भर की पोषण संबंधी ज़रूरतों को पूरा करती हैं, लेकिन अंतरिक्ष यात्रियों के लिए अकेले यह पर्याप्त नहीं है। वैज्ञानिकों की टीम पराठे की

गोलियों पर काम कर रही है और सांभर-चावल, डोसा और चपाती जैसे भारतीय व्यंजनों के पाउडर या संशोधित रूप पर परीक्षण कर रही है। गुणवत्ता और सौंदर्य से समझौता किए बिना फॉर्मूलेशन तैयार किए जा रहे हैं।

सीएसआईआर की महानिदेशक ने एसईआरसी और सीएसआईआर-सीईसीआरआई की यूनिट का दौरा किया

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के महानिदेशक और सचिव, डीएसआईआर, डॉ. (श्रीमती) एन. कलाईसेल्वी के साथ नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के सचिव श्री संतोष कुमार सारंगी ने 18 अगस्त 2025 को सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स में सीएसआईआर-संरचनात्मक अभियांत्रिकी अनुसंधान केंद्र (सीएसआईआर-एसईआरसी), चेन्नई और सीएसआईआर-केंद्रीय विद्युत रासायनिक अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीईसीआरआई) चेन्नई यूनिट का दौरा किया।

कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, सीएसआईआर-एसईआरसी की निदेशक डॉ. एन. आनंदवल्ली ने सीएसआईआर-एसईआरसी की उपलब्धियों और प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास पहलों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रस्तुति दी। सीएसआईआर-एसईआरसी की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एम. कीर्तन ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में केंद्र की बहु-विषयक अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों का अवलोकन प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में पवन ऊर्जा (अपतटीय और तटीय), सौर ऊर्जा (भूमि-आधारित, अंतर्देशीय जल निकायों में तैरते हुए और अपतटीय समाधान) और जलविद्युत ऊर्जा में हुई प्रगति को शामिल किया गया। कार्बन संग्रहण, उपयोग और भंडारण (सीसीयूएस) पर चल रहे शोध पर भी प्रकाश डाला गया।

सीएसआईआर-सीईसीआरआई के निदेशक डॉ. के. रमेशा ने प्रतिनिधिमंडल को लिथियम-आयन, सोडियम-आयन और अगली पीढ़ी की बैटरी प्रौद्योगिकियों, रेडॉक्स फ्लो बैटरियों, पॉलिमर इलेक्ट्रोलाइट मेम्ब्रेन (पीईएम) ईंधन सेल, पीईएम-आधारित ग्रीन हाइड्रोजन इलेक्ट्रोलाइजर, समुद्री जल इलेक्ट्रोलाइजर और सीएसआईआर-सीईसीआरआई की डायरेक्ट एयर कैप्चर प्रौद्योगिकियों पर अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सचिव ने सीएसआईआर-सीईसीआरआई की लिथियम-आयन निर्माण और पीईएम-ईंधन सेल परीक्षण सुविधाओं का अवलोकन किया। श्री संतोष कुमार सारंगी ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में उनके सराहनीय



प्रयासों की सराहना की। इस कार्यक्रम के दौरान, गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-एसईआरसी और सीएसआईआर-सीईसीआरआई दोनों के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की और वर्तमान एवं भविष्य के अनुसंधान दिशाओं पर विचारों और अंतर्दृष्टि का आदान-प्रदान किया।

सीएसआईआर-सीडीआरआई ने इसरो के साथ मिलकर मनाया राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस 2025

सीएसआईआर-केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीडीआरआई), लखनऊ ने इसरो ट्रेकिंग एंड कमांड नेटवर्क (आईएसटीआरएसी), के सहयोग से “आर्यभट्ट से गगनयान: प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाओं” विषय के साथ राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस-2025 मनाया। इस कार्यक्रम में अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की उल्लेखनीय यात्रा का स्मरण करने के लिए प्रख्यात वैज्ञानिक, शिक्षाविद, छात्र और गणमान्य व्यक्ति एक साथ आए।

आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री आसिफ सिद्दीकी ने स्वागत भाषण दिया और दिन के समारोह की शुरुआत की। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, श्री टी.एस. गणेश, उप निदेशक, आईएसटीआरएसी, बेंगलुरु उपस्थित रहे, जिनकी उपस्थिति ने इस अवसर को और भी महत्वपूर्ण बना दिया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में श्री जयशंकर श्रीवास्तव, माध्यमिक शिक्षा के एसोसिएट निदेशक, उत्तर प्रदेश; डॉ. समन हबीब, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीडीआरआई; और श्रीमती रूपा एम.वी., समूह निदेशक, आईएटीआरएसी, बेंगलुरु शामिल थीं। उन्होंने सभा को संबोधित किया और युवा पीढ़ी में वैज्ञानिक जिज्ञासा और नवाचार को पोषित करने के महत्व पर प्रकाश डाला, साथ ही वैश्विक



अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत की बढ़ती भूमिका को भी स्वीकार किया।

चंद्रयान-3 की परियोजना निदेशकों में से एक श्रीमती रूपा एम.वी. द्वारा एक मुख्य व्याख्यान दिया गया, उन्होंने “चंद्रयान-3 की सफलता की कहानी की झलक” पर एक प्रेरक वार्ता साझा की। इसके बाद मुख्य अतिथि श्री टी.एस. गणेश द्वारा अध्यक्षीय भाषण और अतिथि व्याख्यान दिया गया, जिसमें उन्होंने अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत की महत्वाकांक्षी प्रगति, चंद्रयान और गगनयान जैसे आगामी मिशनों के महत्व और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में राष्ट्र के लिए प्रतीक्षारत अपार अवसरों के बारे में बात की।

इस समारोह ने छात्रों को वैज्ञानिकों के साथ बातचीत करने के लिए एक मंच भी प्रदान किया; इसके बाद एक विशेष इंटरैक्टिव सत्र हुआ,

जिसके दौरान श्री टी.एस. गणेश एवं गणमान्य व्यक्तियों ने चंद्रयान-3, गगनयान, अंतरिक्ष विज्ञान में करियर के अवसरों और जिज्ञासा-प्रेरित अनुसंधान के महत्व से जुड़े प्रश्नों का धैर्यपूर्वक उत्तर दिया और युवा प्रतिभागियों को सीमाओं से परे सोचने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में 30 से अधिक स्कूलों के 500 से अधिक छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

छात्रों की मॉडल प्रदर्शनी ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उनकी रचनात्मकता और नवीन सोच को प्रदर्शित किया। दोपहर के सत्र में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर आधारित फिल्मों के प्रदर्शन के साथ-साथ एक अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी और चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसने भाग लेने वाले स्कूली बच्चों में अपार उत्साह पैदा किया। सत्र का समापन एक समापन समारोह और पुरस्कार वितरण के साथ हुआ।